वह अपने डंडे के सिरे पर टेक लगाकर परमेश्वर की आराधना करता
रहा

इब्रानियों 11:21 (पवित्र बाइबल – हिंदी OV)
“विश्वास के द्वारा याकूब ने मरते समय यूसुफ के पुत्रों में
से एक-एक को आशीष दी और अपने डंडे के सिरे पर टेक लगाकर परमेश्वर को प्रणाम किया।”

क्या आपने कभी ठहरकर यह सोचा है कि पवित्रशास्त्र इस बात को विशेष रूप से क्यों बताता है?
यह क्यों लिखा गया कि याकूब आराधना करते समय अपने डंडे के सिरे पर टेक लगाए था?
दीवार, बिस्तर या कुर्सी का उल्लेख क्यों नहीं किया गया?

पवित्र आत्मा ने इस चित्र को जानबूझकर सुरक्षित रखा है, क्योंकि याकूब का यह अंतिम कार्य गहरे आत्मिक और भविष्यसूचक अर्थ से भरा हुआ था।

क्रूस की पूर्वछाया

जब याकूब ने यूसुफ के दोनों पुत्रों—एप्रैम और मनश्शे—को आशीष दी, तो उसने जानबूझकर अपने हाथों को पार किया। उसने अपना दाहिना हाथ छोटे पुत्र एप्रैम पर और बायाँ हाथ बड़े पुत्र मनश्शे पर रखा (उत्पत्ति 48:14)।

वह अपने डंडे के सिरे पर टेक लगाकर परमेश्वर की आराधना करता
रहा

यूसुफ ने उसे सुधारने की कोशिश की, पर याकूब ने उत्तर दिया:

उत्पत्ति 48:19 (हिंदी OV)
“मैं जानता हूँ, मेरे पुत्र, मैं जानता हूँ। वह भी एक जाति
बनेगा और महान होगा; तौभी उसका छोटा भाई उससे भी बड़ा होगा,
और उसकी सन्तान बहुत-सी जातियाँ बनेंगी।”

अपने हाथों को पार करके याकूब ने भविष्यवाणी के रूप में क्रूस का चित्र प्रस्तुत किया—एक ऐसा भेद जो बाद में यीशु मसीह में पूरी तरह प्रकट हुआ। उसी के द्वारा उद्धार पहले अन्यजातियों तक पहुँचा। प्रेरित पौलुस इस सत्य को इस प्रकार स्पष्ट करता है:

रोमियों 11:11 (हिंदी OV)
“उनके गिरने से अन्यजातियों को उद्धार मिला, कि उन्हें डाह दिलाई जाए।”

याकूब के कार्य संयोग नहीं थे; वे परमेश्वर के आत्मा के द्वारा प्रेरित थे।

वह अपने डंडे के सिरे पर टेक लगाकर परमेश्वर की आराधना करता
रहा

डंडा: अधिकार, चरवाहे की देखभाल और यात्री जीवन का प्रतीक

पवित्रशास्त्र में डंडा (या छड़ी) मुख्य रूप से तीन बातों का प्रतीक है:

1. राजसी अधिकार

राजा अपने अधिकार के चिन्ह के रूप में राजदंड रखते थे। मसीह के विषय में लिखा है:

भजन 2:9 (हिंदी OV)
“तू उन्हें लोहे के राजदण्ड से तोड़ डालेगा; तू उन्हें कुम्हार के बर्तन के समान चूर-चूर करेगा।”

2. चरवाहे की देखभाल

दाऊद पूरे भरोसे के साथ कहता है:

भजन 23:4 (हिंदी OV)
“तेरा सोंटा और तेरी लाठी, वे मुझे शान्ति देते हैं।”

वह अपने डंडे के सिरे पर टेक लगाकर परमेश्वर की आराधना करता
रहा

चरवाहे की लाठी भेड़ों का मार्गदर्शन करती, उनकी रक्षा करती और आवश्यकता पड़ने पर उन्हें सुधारती थी। याकूब के लिए डंडा इस बात की गवाही था कि वह परमेश्वर की भेड़ है (यूहन्ना 10:11—“मैं अच्छा चरवाहा हूँ”)।

3. यात्री और परदेशी का चिन्ह

प्राचीन समय में कोई भी यात्री डंडे के बिना यात्रा नहीं करता था। जब इस्राएल मिस्र से निकलने की तैयारी कर रहा था, तब परमेश्वर ने आज्ञा दी:

निर्गमन 12:11 (हिंदी OV)
“इसे इसी रीति से खाना: तुम्हारी कमर बँधी हो, पाँव में जूते हों और हाथ में लाठी हो; और फुर्ती से खाना। यह यहोवा का फसह है।”

इसी प्रकार, यीशु ने अपने चेलों को राज्य का प्रचार करने भेजते समय कहा:

मरकुस 6:8 (हिंदी OV)
“और उन्हें आज्ञा दी कि मार्ग के लिये लाठी को छोड़ और कुछ न

वह अपने डंडे के सिरे पर टेक लगाकर परमेश्वर की आराधना करता
रहा

लें—न रोटी, न झोली, न कमर में पैसे।”

इस प्रकार, जब याकूब आराधना करते समय अपने डंडे पर टेक लगाए था, तो वह यह घोषित कर रहा था कि उसका पूरा जीवन पृथ्वी पर एक यात्री और परदेशी के रूप में बीता है।

परदेशियों के समान जीवन

इब्रानियों का लेखक विश्वास के पूर्वजों के विषय में लिखता है:

इब्रानियों 11:13 (हिंदी OV)
“ये सब विश्वास ही में मरे और प्रतिज्ञाओं की वस्तुएँ
प्राप्त न कीं, पर उन्हें दूर से देखकर मान लिया और यह
स्वीकार किया कि हम पृथ्वी पर परदेशी और बाहरवाले हैं।”

याकूब ने इस संसार को कभी अपना स्थायी घर नहीं माना। उसका डंडा मानो यह कह रहा था:
“मैं यहाँ केवल मार्ग में हूँ।”

प्रेरित पतरस भी विश्वासियों को यही स्मरण दिलाता है:

वह अपने डंडे के सिरे पर टेक लगाकर परमेश्वर की आराधना करता
रहा

1 पतरस 2:11 (हिंदी OV)
“हे प्रियो, मैं तुमसे बिनती करता हूँ कि परदेशियों और यात्रियों के समान उन शारीरिक अभिलाषाओं से बचे रहो, जो
आत्मा से लड़ती हैं।”

परमेश्वर के डंडे पर भरोसा रखना अर्थात अनन्तकाल को ध्यान में रखकर जीवन जीना—आँखों से देखकर नहीं, पर विश्वास से चलना (2 कुरिन्थियों 5:7)।

मसीह—हमारा चरवाहा और हमारा डंडा

अंततः, याकूब के हाथ में वह डंडा स्वयं यीशु मसीह की ओर संकेत करता था।
वह अच्छा चरवाहा है (यूहन्ना 10:11) और वही हमें शत्रु की सामर्थ्य पर अधिकार देता है:

लूका 10:19 (हिंदी OV)
“देखो, मैं ने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं पर और शत्रु की सारी शक्ति पर अधिकार दिया है।”

वह अपने डंडे के सिरे पर टेक लगाकर परमेश्वर की आराधना करता
रहा

जिस प्रकार मूसा की लाठी लाल समुद्र के ऊपर उठाए जाने पर इस्राएल के लिए छुटकारे का साधन बनी (निर्गमन 14:16), उसी प्रकार मसीह का क्रूस—वह सच्चा और ऊँचा उठाया गया डंडा—सभी जातियों के लिए उद्धार का मार्ग बना।

अंतिम मनन

याकूब का अंतिम कार्य कमजोरी नहीं था—वह आराधना थी।
अपने डंडे पर टेक लगाकर उसने यह गवाही दी कि उसका पूरा जीवन परमेश्वर के सहारे टिका रहा। उसके पुत्रों ने शायद केवल एक वृद्ध मनुष्य को देखा हो, पर वास्तव में वह उस चरवाहे में अपना विश्वास घोषित कर रहा था जिसने उसे आरंभ से अंत तक मार्ग दिखाया।

अब स्वयं से प्रश्न कीजिए:

क्या मैं प्रतिदिन चरवाहे के डंडे—मसीह यीशु—के सहारे चलता हूँ?
क्या मैं एक यात्री की तरह जी रहा हूँ, या इस संसार को ही अपना स्थायी घर मान बैठा हूँ?
क्या मेरे जीवन पर क्रूस की छाप दिखाई देती है, जैसे याकूब के आशीष में दिखाई दी?

परमेश्वर की हर सच्ची सन्तान उसका डंडा थामे चलती है।
वह हमारी पहचान का चिन्ह और हमारी यात्रा की गवाही है।

वह अपने डंडे के सिरे पर टेक लगाकर परमेश्वर की आराधना करता रहा

शालोम।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp